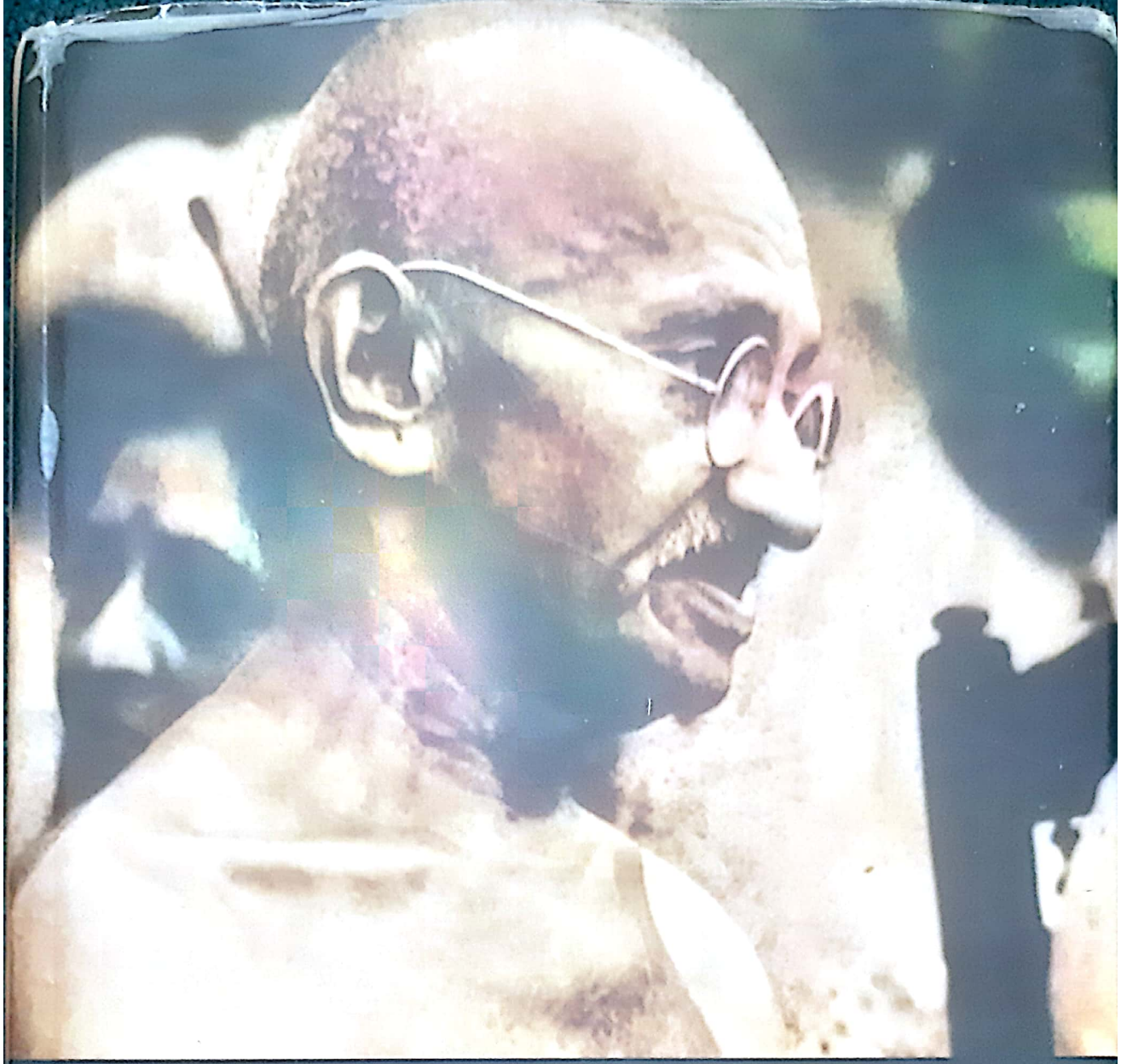

गाँधी चिन्तन के विविध आयाम

संपादक : प्रो. विजयलक्ष्मी शर्मा, डॉ. जयलक्ष्मी कौल

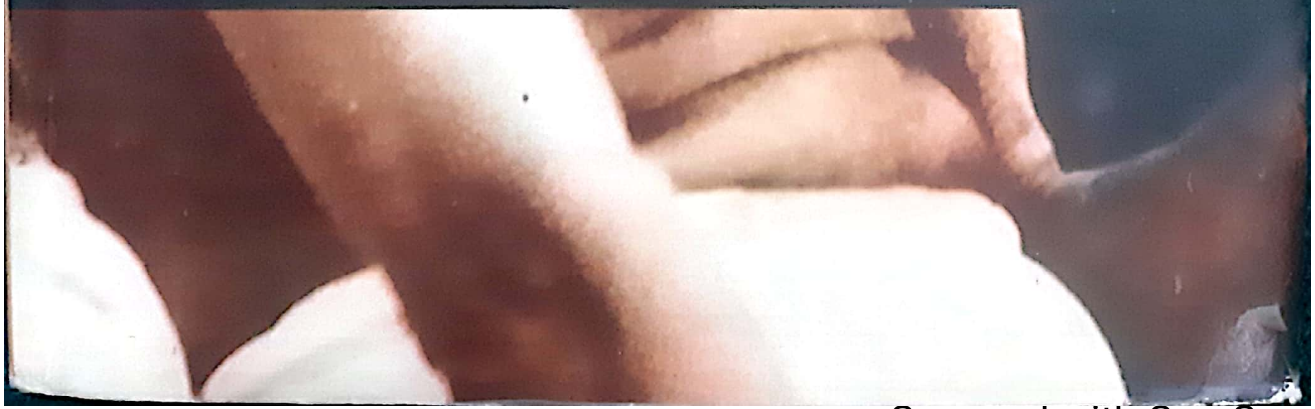

Scanned with CamScanner

गाँधी चिन्तन के विविध आयाम

सम्पादिका

प्रो. (डॉ.) विजयलक्ष्मी शर्मा
प्राचार्या
शहीद हीरासिंह राजकीय स्नातक
महाविद्यालय, चन्दौली
(उ.प्र.)

डॉ. जयलक्ष्मी कौल
सहायक प्रोफेसर
इतिहास विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

भारती प्रकाशन
वाराणसी

Scanned with CamScanner

प्रकाशक :
भारती प्रकाशन
45, धर्मसंघ कॉम्पलेक्स,
दुर्गाकुण्ड, वाराणसी–221010
फोन : 0542-2312677, मो. : 9305292293
E-mail : bharatiprakashan@gmail.com
Website : www.bharatiprakashan.in

© सम्पादिका

प्रथम संस्करण : 2019

मूल्य : 700/-

ISBN : 978-93-88019-33-0

शब्द-संयोजन एवं मुद्रक :
क्वालिटी ऑफसेट, दिल्ली–110032

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

प्रस्तावना 5

सम्पादकीय 7

On History and Civilization : A Gandhian Perspective 11
Prof. Aruna Sinha

गांधी की अहिंसा दृष्टि और शान्ति 21
प्रो. प्रतिभा पांडेय

मेरी दृष्टि में गांधी 28
डॉ. विजयलक्ष्मी शर्मा

महात्मा गांधी की धर्म दृष्टि 37
डॉ. जय लक्ष्मी कौल

गांधी, गांधीवाद और गांधीवादी–एक दृष्टि में 43
डॉ. रमाकान्त सिंह

अब भी समझो गांधी को 46
डॉ. प्रवेश भारद्वाज

'गांधी का सत्पथ एवं उसकी प्रासंगिकता' 51
डॉ. सुनील कुमार दूबे

समकालीन परिप्रेक्ष्य में गांधी की अन्तर्दृष्टि और चम्पारण सत्याग्रह 58
श्री शिव शंकर सिंह "पारिजात"

महात्मा गाँधी और डॉ. अम्बेडकर के नारी
सशक्तिकरण विषयक विचार 66
डॉ. कामिनी वर्मा

स्वतंत्रता का सूर्य और गाँधी का अवसान 75
डॉ. किरण कुमारी

पत्रकार गाँधी 83
डॉ. शारदा पाण्डेय

Scanned with CamScanner

गांधी की अहिंसा दृष्टि और शान्ति

प्रो. प्रतिभा पांडेय*

लैटिन भाषा के 'वायलेन्टिया' से निर्मित 'वायलेन्स' के अंग्रेजी रूपान्तरण वाले हिंसा शब्द का सामान्य अर्थ अनियंत्रित प्रचंड शक्ति अथवा उग्रता है। इसके विलोम 'अहिंसा' को सामान्यतः नकारात्मक भाव के रूप में स्वीकार किया जाता है क्योंकि स्वाभाविक रूप से मान लिया जाता है कि संसार चारों ओर हिंसा से परिपूर्ण है और मानवीय क्रिया-कलाप हिंसा के बिना सम्भव ही नहीं है। जंगल राज और मत्स्यन्याय में समर्थ द्वारा असमर्थ अथवा अल्प समर्थ की हिंसा अनिवार्य है परन्तु बर्बरता से सभ्यता और अपूर्णता से पूर्णता के यात्री और सभ्यता तथा संस्कृति के विकास का प्रतीक माने जाने वाले मनुष्य से अनिवार्यतम हिंसा भी कम से कम किए जाने की अपेक्षा की जाती है।

इस अर्थ में अहिंसा को वर्जनात्मक के स्थान पर सकारात्मक भाव के रूप में देखा जाना चाहिए। वस्तुतः भारतीय परम्परा में हिंसा का अर्थ मारना ही नहीं, मारने अथवा किसी को दुःख पहुंचाने की इच्छा के रूप में ग्रहण किया गया है जो कि सहज मानवीय प्रकृति के प्रतिकूल है। अतः हिंसा का त्याग अथवा अहिंसा का स्वीकार अपनी सहज वृत्ति के ऊपर किसी प्रकार का दबाव नहीं, बल्कि अपनी सहज प्रवृत्ति को प्राप्त करना ही है।

भारतीय संस्कृति में अहिंसा का यशोगान करते हुए उसे प्रमुख सांस्कृतिक तत्व, यहां तक कि 'परम धर्म' (अहिंसा परमो धर्मः) के रूप में स्वीकृत किया गया है।

* प्रोफेसर, इतिहास विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

Scanned with CamScanner

उच्चतर मानवीय नियम के रूप में 'अहिंसा' को ग्रहण करते हुए गांधीजी सामान्यजन के लिए भी इसकी अनिवार्यता अनुभव करते हैं–

'अहिंसा का धर्म केवल ऋषियों और सन्तों के लिए नहीं है। यह सामान्य लोगों के लिए भी है। अहिंसा उसी प्रकार से मानवों का नियम है, जिस प्रकार से हिंसा पशुओं का नियम है। पशु की आत्मा सुप्तावस्था में होती है और वह केवल शारीरिक शक्ति के नियम को ही जानता है। मानव की गरिमा एक उच्चतर नियम आत्मा के बल के नियम के पालन की अपेक्षा करती है।

अहिंसा और उस पर आधारित सत्याग्रह का नितान्त मौलिक दर्शन विश्व को देने वाले गांधीजी अहिंसा के पर्याय बन गए। महावीर, बुद्ध और ईसामसीह के बाद उन्होंने पुनः दिखाया कि अहिंसा सामाजिक राजनैतिक परिवर्तन लाने का एक सशक्त माध्यम बन सकता है, परन्तु मूलतः करुणा पर आधारित इन तीनों की अहिंसा के विपरीत टॉल्सटॉय की प्रेरणा से स्वयं में निवास करने वाले ईश्वर को प्रेम करने का सूत्र देने वाले गांधीजी विश्व के अकेले ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने अहिंसा को ब्रह्मास्त्र बनाया। स्वयं टॉल्सटॉय ने 7 सितम्बर, 1910 को अपनी मृत्यु (4 नवम्बर 1910) से दो माह पूर्व लिखित अपने अन्तिम पत्र में स्वीकार किया है कि अहिंसा के असली अर्थ को जैसा गांधीजी ने समझा, वैसा किसी ने भी नहीं। यद्यपि गांधीजी ने बार बार कहा कि मैं कोई विद्वान नहीं हूं। मैं तो सत्य का संधान इसलिए कर रहा हूं कि अहिंसा के रास्ते पर चल सकूं। ऐसी विद्वत्ता का मेरे लिए कोई मेल नहीं है, जिससे मुझे जीने का कोई सूत्र न मिल सके।

गांधीजी अहिंसा की शक्ति से भलीभांति परिचित थे। वे जानते थे कि अहिंसा की प्रतिष्ठा हो जाने पर साधक के समीप सबका बैर-भाव नष्ट हो जाता है–"अहिंसाया प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः।" यही कारण है कि गांधीजी आजीवन अहिंसा के संगठन में रत रहे। वे कहते थे–

"अहिंसा के प्रति मेरा प्रेम सभी लौकिक अथवा अलौकिक वस्तुओं से बढ़कर है। इसकी बराबरी केवल सत्य के प्रति मेरे प्रेम से की जा सकती है जो मेरी दृष्टि में अहिंसा का समानार्थक है, केवल अहिंसा के माध्यम से ही मैं सत्य को देख और उस तक पहुंच सकता हूं।"

गांधी और गांधी की अहिंसा–दोनों की प्रासंगिकता पर लगातार वैचारिक बहसें होती रही हैं और आगे भी होती रहेगी, परन्तु निस्सन्देह गांधी उन महामानवों में अग्रतम हैं, जिनके विचारों की प्रासंगिकता अपने समय विशेष की परिस्थितियों

Scanned with CamScanner

और समस्याओं के सन्दर्भ के साथ-साथ सालों बाद भी बनी रहती है। अहिंसा का प्रश्न ही कालबाह्य हो जाने वाले प्रश्न नहीं है। स्वयं गांधीजी के शब्दों में "अहिंसा विश्व का एक बहुत बड़ा सिद्धान्त है, जिसे संसार की कोई शक्ति मिटा नहीं सकती। इस आदर्श की महत्ता प्रमाणित करने में मेरे जैसे हजारों खत्म हो जाएंगे, पर अहिंसा कभी खत्म नहीं होगी।"

ऐसा इसलिए भी कि उनकी अहिंसा का कलेवर अत्यन्त विशाल है। उन्होंने इसकी प्रेरणा वेदों से ग्रहण की जिसमें 'मा हिंसीः' अर्थात् दूसरों को सताने की इच्छा न करो, का आदेश होने के साथ-साथ 'मा नो द्विक्षत कश्चन' अर्थात् 'मुझसे दूसरे द्वेष न करें का भी उपदेश है। तात्पर्य यह कि अपने को ऐसा बनाएं कि दूसरे हमसे द्वेष न करें, जलें नहीं, घबरायें नहीं। ऐसा भाव गांधीजी की अहिंसा का ही हो सकता है।

अन्याय का प्रतिकार करने के गांधीवादी अहिंसक मार्ग की व्यावहारिकता अनेक अन्य सन्दर्भों से भी होती है। कार्ल मार्क्स और गांधी दोनों ने मानव समाज के लिए जिन व्यवस्थाओं की वकालत की, वे एक समान नहीं थे, दोनों ने रॉस्किन की 'अन टू दी लास्ट' से प्रेरणा ली। यह तय नहीं है कि यदि मार्क्स के जीवनकाल में ही उनके नेतृत्व में क्रान्ति होती तो उसका रास्ता क्या होता, परन्तु गांधी के विपरीत अपने साध्य को प्राप्त करने के लिए वे प्रत्येक मार्ग को उचित समझते थे। बाद की क्रान्तियों में भी उनके अनुयायियों ने शासन तथा उत्पादन के साधनों पर अधिकार किया तथा बाद में भी साम्यवाद में समता के नाम पर विरोधियों को हिंसा के द्वारा दबाया गया। यह आश्चर्यजनक नहीं है कि हिंसा के द्वारा आयी क्रान्ति अंत तक हिंसा के ही बल पर टिक सकी और क्रान्ति की उस व्यवस्था का समापन अवश्य यूगोस्लाविया के अपवाद को छोड़कर प्रायः अहिंसक आन्दोलन से हुआ।

गांधीजी ने अपने विचारों से तत्कालीन विश्व के साथ-साथ परवर्ती विश्व को भी प्रभावित किया, विशेष रूप से अहिंसा के विचार से। आइन्सटाइन और रोम्यां रोलां जैसे समकालीन उनकी मेधा से अभिभूत थे। जहां विख्यात वैज्ञानिक आइन्सटाइन ने कहा कि मैं मानता हूं कि गांधी के विचार हमारे समय के सारे राजनेताओं से अधिक प्रबुद्ध हैं, वहीं यूरोप के प्रगतिशील आन्दोलन की पहली पंक्ति के विचारक और गांधीजी के अनन्य मित्र रहे रोम्यां रोलां हिंसक क्रान्तियों के बदले गांधी के आन्दोलन के पक्ष में थे और वे चाहते थे कि गांधी विश्वजनीन आन्दोलन का नेतृत्व करें। एक बार उन्होंने कहा था कि हम एक गम्भीर संकट

Scanned with CamScanner

से होकर गुजर रहे हैं, जिसमें हिंसा की शक्तियों द्वारा मानवता की आशाओं को चकनाचूर होने का भय है। यह हिंसा सारे संसार पर हावी है। यदि जल्दी ही कोई उपाय नहीं किया गया तो बीस वर्षों में सब कुछ बर्बाद हो जाएगा।

गांधी की मृत्यु के बाद अनेक देशों में उनकी अहिंसा का रचनात्मक उपयोग किया गया। मार्टिन लूथर किंग ने अहिंसक तरीकों से अश्वेतों के मानवाधिकारों के लिए संघर्ष किया। यहां तक कि अंत में हिंसा का शिकार होकर मृत्यु का वरण किया। उन्होंने स्वीकार किया था कि यदि मानवता को प्रगति करनी है तो गांधीजी नितान्त आवश्यक है। उनका जीवन, विचार और कर्म सभी कुछ शान्ति और सौहार्दपूर्ण विश्व के आदर्श से अनुप्राणित था। यदि हम गांधीजी को भुला देते हैं तो इसमें हमारा ही नुकसान होगा। अफ्रीका में डेसमंड टूटू ने गांधीवादी तरीके से ही संघर्ष किया। आगे चलकर पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया आदि की जनता ने गांधीवादी रास्ते का ही प्रयोग कर रूसी आधिपत्य का विरोध किया।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भी गांधी बहुत याद आते हैं। आज जब आतंक 21वीं सदीं की सबसे बड़ी चुनौती बन चुका है, शक्तिशाली मारक शस्त्रास्त्रों से दुनिया विनाश के कगार पर है और हिंसा मानव की अब तक की उपलब्धियों को निगलकर मात्र औपनिवेशिक दासता से मुक्ति का औजार न रहकर समृद्ध पश्चिमी देशों के दंभ का हथियार बन गई है तब गांधी की अहिंसा और प्रासंगिक हो उठती है।

वर्तमान विश्व में अपार खर्च के द्वारा शस्त्रास्त्रों के निर्माण की होड़ मची है और सर्वोच्च शक्तियों के शस्त्रागारों में हजारों आणविक विस्फोटक पदार्थ हैं, जिनमें से प्रत्येक की मारक क्षमता हिरोशिमा बम से अनेक गुना अधिक है। वस्तुतः इनकी विनाशक शक्ति से भी अधिक समस्याजनक स्थिति उनको नियंत्रण में रखने तथा कम करने की है, अर्थात् प्रभावकारी निरस्त्रीकरण अथवा शस्त्र नियंत्रण के उपाय विकसित करने की है।

गांधीजी इस बात पर विश्वास जमा चुके थे कि समग्र तथा व्यापक निरस्त्रीकरण आवश्यक है। 1921 में ही उन्होंने कह दिया था कि मेरे सपनों के 'स्वराज' में शस्त्रास्त्र की जरूरत होगी ही नहीं। 1942 में उन्होंने फिर कहा कि यदि वे भारत के स्वतंत्र होने तक जीवित रहे तो वे "सलाह देंगे कि अहिंसा जहां तक सम्भव हो, चरम सीमा तक अपनायी जाए और यह विश्व में शान्ति तथा नई विश्व व्यवस्था की स्थापना में भारत का सबसे बड़ा योगदान होगा। 1947 तक आते-आते उन्हें पूर्ण विश्वास हो गया कि यदि भारत ने अपनी अहिंसक शक्ति विकसित नहीं की तो उससे न तो अपना और न विश्व का ही कोई हित होगा। इसके विपरीत शान्ति का मार्ग

Scanned with CamScanner

अपनाने पर वह विश्व का नेतृत्व कर सकता है–

"यदि समूचा भारत शान्ति के शाश्वत नियम को स्वीकार कर ले तो वह सारे संसार का निर्विवाद नेता बन जाएगा।"

अतः व्यापक और समग्र निरस्त्रीकरण पर आधारित एक अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था बनने से पूर्व (और गांधीजी के विश्वास के अनुसार ऐसी व्यवस्था एक दिन बनेगी ही) एक दिन "किसी राष्ट्र को स्वयं अपने को निरस्त्र कर देने और बड़े खतरे उठाने का साहस करना ही होगा।"

ऊपरी तौर पर गांधीजी का यह एकपक्षीय निरस्त्रीकरण का सुझाव अव्यवहारिक और दुष्कर प्रतीत होता है पर यह असम्भव बिल्कुल नहीं है। आज भी विश्व के कुछ राष्ट्र सशस्त्र बल से रहित है और ये राष्ट्र अपनी सुरक्षा हेतु प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सामूहिक सुरक्षा, अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली, विश्व के लोकमत अथवा अन्य राष्ट्रों के समर्थन और सहारे पर आश्रित रहते हैं।

यूनेस्को की भूमिका में एक अद्‌भुत वाक्य मिलता है कि लड़ाइयां लोगों के मस्तिष्क में पैदा होती हैं, इसलिए शान्ति और सुरक्षा की भावना भी लोगों के मस्तिष्क में पैदा करनी है। गांधीजी इस तथ्य को बहुत पहले ही जान चुके थे। इसीलिए उन्होंने निर्भयता की बात की, न सिर्फ बात की बल्कि परीक्षण भी किया, स्वयं पर भी, समाज पर भी। अफ्रीका में पहले रेलगाड़ी में 'गोरों की मार' के डर से और बाद में हथियारों और कानूनों की हिंसा के भय से मुक्ति पाई। भारतीय स्वातंत्र्य आन्दोलन में हर भारतीय को उन्होंने निर्भयता, यहां तक की मृत्यु से भी निर्भयता का पाठ पढ़ाया। यह निर्भयता अहिंसा से ही उपजती है, एक अहिंसक व्यक्ति ही निर्भय हो सकता है। अहिंसा को शक्तिशाली विनाशक शस्त्रों से भी शक्तिशाली घोषित करते हुए गांधीजी कहते हैं–

"विनाश मानवों का नियम नहीं है। मनुष्य कभी अपने भाई को मारकर नहीं, बल्कि जरूरत पड़े तो उसके हाथों मरने के लिए तैयार रहकर आजादी से जीता है।"

गांधी की अहिंसा के अन्य आयाम भी है, उदाहरणार्थ बीसवीं सदी के प्रारम्भ में ही पश्चिम की आधुनिक भौतिकवादी, भोगवादी संस्कृति का विकल्प देने का प्रयास उन्होंने किया। 'हिन्द स्वराज' में उन्होंने इस संस्कृति की कुछ मूलभूत अवधारणाओं को चुनौती दी, जिनमें सर्वप्रमुख था 'शक्तिशाली की उत्तरजीविता' अर्थात् Survival of the Fittest की अवधारणा। डार्विन द्वारा प्रस्तुत इस अवधारणा के अनुसार जो शक्तिशाली होगा, उसी को जीवित रहने का अधिकार है। इसी

Scanned with CamScanner

के तहत पश्चिमी सभ्यता ने घातक हथियारों का निर्माण कर निर्बल देशों का शोषण किया। गांधीजी ने इस पशुबल को चुनौती देते हुए निर्बल के जीने के अधिकार को प्राथमिकता दी और अहिंसा तथा सत्याग्रह के औजार से निर्बल को इतना सबल बना दिया कि वह दुनिया के सबसे बड़े साम्राज्य को चुनौती देने में समर्थ हो सका।

आज पश्चिम की भौतिकवादी संस्कृति की परिणति विनाशक हथियारों के रूप में ही नहीं, वैश्वीकरण और मुक्त बाजार के रूप में भी परिलक्षित होती है। इसके परिणामस्वरूप जहां तीसरी दुनिया के देशों में बेरोजगारी, भुखमरी, आत्महत्या, आर्थिक पराधीनता और सांस्कृतिक संक्रमण के साथ-साथ अपराध और आतंक की स्थिति है, वहीं स्वयं समृद्ध देशों में भी बेरोजगारी और सांस्कृतिक खोखलेपन के साथ-साथ अपराध आतंक और नस्लीय संघर्ष की चुनौती है। असुरक्षा से ग्रस्त हजारों बच्चे बन्दूक लेकर स्कूल जाने को मजबूर हैं, वहीं सांस्कृतिक खोखलेपन के सामाजिक ताने-बाने को छिन्न-भिन्न कर दिया गया हैं यहां गांधी और उनकी अहिंसा अत्यन्त प्रासंगिक हो उठती है, क्योंकि गांधी के विचार मनुष्य के समग्र विकास को प्रभावित करते हैं, इसलिए उसमें विश्वास व्यक्ति को दुष्मार्ग की ओर जाने ही नहीं देता। सच तो यह है कि प्रत्येक देश का आम आदमी शान्ति, मित्रता और विकास चाहता है। आज की युवा भारतीय पीढ़ी ने तो "लगे रहो मुन्नाभाई" के अहिंसक सत्याग्रह को दिल से स्वीकार किया है। गांधी की प्रासंगिकता रेखांकित करने के लिए यह तथ्य तो पर्याप्त है ही, गत दिनों भ्रष्टाचार के विरुद्ध अहिंसक आन्दोलनों और स्त्री अस्मिता और बालपन पर हुए हमलों के विरुद्ध संयत युवा आन्दोलनों से भी यह तथ्य पुष्ट होता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि अहिंसा अपनत्व की खोज है और इस अपनापे को पाने और देने के लिए हमें तत्पर होना ही होगा।

संदर्भ

1. यंग इंडिया, 11.8.1920, पृ. 3
2. यंग इंडिया, 20.2.1930 पृ. 61
3. हरिजन, 17.5.1946 पृ. 140
4. रोजगार समाचार, 30 सितम्बर–6 अक्टूबर 1995
5. यंग इंडिया, 6.4.1921, पृ. 108
6. हरिजन, 21.6.1947, पृ. 197
7. हरिजन, 8.6.1947, पृ. 177

Scanned with CamScanner

8. हरिजन, 20.7.1935, पृ. 180–81

अन्य संदर्भ

1. हरदयाल सिंह राठौड़, (सं.) गांधी विचार दर्शन, पुरोहित प्रकाशन, जोधपुर।
2. गांधी विचार दोहन, मसरुम वाला, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद।
3. गांधी चिन्तन : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, राज. हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
4. धीरेन्द्र मोहन दत्त, महात्मा गांधी का दर्शन, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी पटना।
5. डी. जी. तेंदुलकर, महात्मा वॉल्युम–3 नई दिल्ली।
6. पाण्डेय ओम प्रकाश, (सं.) महात्मा गांधी का सर्वोदय, भारती प्रकाशन, वाराणसी, 2014।
7. Non Violence in peace and war Vol. I, Navjeevan Publishing House, Ahamadabad.
8. Naresh Dadhis, Gandhi & Existentialism, Rawat Publication Jaipur.

❑❑

Scanned with CamScanner